CHAPTER 5

(क) सत्य

(ख) एक कम

PAGE 33, प्रश्न और अभ्यास

एक कम

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:1

कवि ने लोगों के आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होने के लिए किन तरीकों की ओर संकेत किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - इस कविता में कवि कहना चाहते है कि लोगो ने अपने महत्वकांक्षाओं जैसे आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होने के लिए लोंगो ने गलत रास्ता चुना है। अपने स्वार्थ के लिए दूसरे के साथ अन्याय करने से पीछे नहीं हटते। ये लोग आपने पैसे विदेशी बैंको में जमा कर रहे है क्योँकि इस देश को लूट कर और खोखला करके जो काला धन कमाया है वो छुपाना चाहते है।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:2

हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - जो व्यक्ति हाथ फैलता है वो भ्रष्टचार में लिप्त नहीं होता है। क्योंकि भ्रष्टाचार नहीं करने के कारण ही उसकी ये दशा हो जाती है की उसे दूसरों के आगे हाथ फ़ैलाने पड़ते है। अगर वो भ्रष्टाचार करता तो उसके पास इतना धन होता की उसे दूसरों के आगे हाथ नहीं फ़ैलाने पड़ते।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:3

1947 से अनेक तरिके से मालामाल हुए किन्तु विमुद्रीकरण होने से उन स्थितियों में बदलाव आया या नहीं ?

उत्तर - 1947 से अभी तक भ्रष्टाचार के वजह से कई लोग मालामाल हो गए तथा अथाह धन जमा कर लिया जो नकदी के रूप में भी था। विमुद्रीकरण के समय वो गरीब लोग प्रभावित हुए जिन्होंने बचत के लिए नकदी राखी थी। परन्तु भ्रष्टाचारी लोग इस से बहोत जायद प्रभावित हुए। विमुद्रीकरण

से समाज में प्रभाव तो पड़ा है। भ्रष्टाचारी लोग परेशां तो हुए इस फैसले से। परन्तु आम आअदमी भी परेशान हुआ है। क्योँकि विमुद्रीकरण के बाद की प्रक्रिया को सही से सयोंजित नहीं किया जा सका था। अतः यह सरकार द्वारा लिया गया ाचा फैसला था परन्तु क्रियान्यवन सही तरीके से नहीं किया जा सका। इस कदम से ही बस सुधर नहीं हो जायेगा। सुधार के लिए हम सबको बदलना पड़ेगा तभी हमारा देश भ्रष्टाचार मुक्त होगा।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:4

'मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर - इस पंक्ति में कवि का आशय यह है कि वो भ्रष्टाचारी तथा अनैतिक लोगों को सम्भोधित कर रहे है। उन भ्रष्टाचारी तथा अनैतिक लोगों को कवी की कोई जरुरत नहीं है क्योँकि कवि उन लोगो का प्रतिस्पर्धी नहीं है। वह उनका विरोधी नहीं है परन्तु इसका मतलब यह नहीं की वो उनके

भ्रष्टाचार में सम्मिलित नहीं होगा। भ्रष्टाचारी तथा अनैतिक लोग उन्हें अपना प्रतिस्पर्धी या समर्थक ना माने।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:5

भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) 1947 के बाद से ..... गतिशील होते देखा है

(ख) मानता हुआ कि हाँ मैं लाचार हूँ ..... एक मामूली धोखेबाज़

(ग) तुम्हारे सामने बिलकुल ..... लिया है हर होड़ से

उत्तर -

(क) इस पंक्ति में कवि कहते है कि **1947** के बहोत से लोंगो ने अनैतिकता तथा भ्रष्टाचार से बहोत सारा धन कमाया। वो लोग समाज में कहते फिरते हिअ की उन लोंगो ने ये धन गतिशील होकर तथा म्हणत से कमाया है। वे लोग बस दिखावा करते है। सभी लोग मेहनत करते है और गतिशील है परन्तु वे लोग मालामाल नहीं हो पाते है।

(ख) कवि खुद को एक लाचार व्यक्ति कहता है क्योंकि वह भ्रष्टाचारी लोंगो को सामने देखकर भी विरुद्ध कुछ नहीं कर पता है। उसे इस बात का एहसास है की यदि वह कोशिश करते तो शायद कुछ कर पाते परन्तु भ्रष्टाचार ने उनके हाथ बांध रखे है। वे खुद को कामचोर कहकर सम्बोधित करते है क्योँकि ईमानदार लोंगो को हाथ फैलते देखकर भी वे उन लोंगो के लिए कुछ नहीं कर सकते है।

(ग) इस पंक्ति का भाव यह है कि कवी ईमानदार के सम्मुख खुद को नंगा तथा लज्जित महसूस क्योँकि वह उनके लिए कुछ नहीं कर सकता अहइ. वह कसी भी प्रकार की प्रतिष्पर्धा ततः टकराव से खुद को दूर रखता है।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:6

शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) कि अब जब कोई ..... या बच्चा खड़ा है।

(ख) मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंद्वी ..... निश्चिंत रह सकते हैं।

उत्तर -

(क) कविता की रचना मुक्त छंद में की गयी है। इसकी भाषा आसान है तथा अनुप्रास अलंकार का है। ईमानदार व्यक्ति के लिए 'हाथ फ़ैलाने ' मुहावरे का प्रयोग किया गया है। उसकी परिस्थिति को दर्शाने के लिए चाय तथा रोटी का प्रयोग किया गया है।

(ख) कविता की रचना मुक्त छंद में की गयी है। इसकी भाषा आसान है तथा अनुप्रास अलंकार का है। इसमें प्रतीकात्मक का प्रयोग किया गया है।

सत्य

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:1

सत्य क्या पुकारने से मिल सकता है? युधिष्ठिर विदुर को क्यों पुकार रहे हैं- महाभारत के प्रसंग से सत्य के अर्थ खोलें।

उत्तर - युधिष्ठिर सत्य के ज्ञान के लिए विदुर को पुकारते है। युधिष्ठिर सत्य का ज्ञान करना चाहते थे। उन्हें पता चला की विदुर जी के पास सत्य का ज्ञान है तो वे विदुर जी के पास पहुँच गए। वे विदुर जी के पीछे पीछे चलने लगे तथा उन्हें पुकारने लगे। विदुर जी हार मानकर रुक गए तथा उन्होंने युद्धिष्ठिर जी को आँखों से सत्य रूपी ज्ञान दिया। युधिष्ठिर को सत्य का ज्ञान हो गया कि सत्य पुकारने से नहीं अपितु धारण करने तथा उसका आचरण करने से मिलता है।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:2

सत्य का दिखना और ओझल होना से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर - सत्य एक शक्ति है जो दिखती जरूर है परन्तु जब यह विरोधियों के बीच में आ जाए तो ओझल भी हो जाता है। सत्य कोई वास्तु नहीं है इसलिए हर वक़्त सबके सामने नहीं रह सकता है। सत्य को लोग अपने स्वार्थ के लिए अपने अपने तरीके से पेश करते है। इसी कारण सत्य ओझल हो

जाता है। सही आचरण से ही सत्य दिखायी देता है। इसीलिए कवि कहते है कि सत्य दिखता और ओझल होता है।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:3

सत्य और संकल्प के अंतर्संबंध पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर - सत्य और संकल्प एक दूसरे से जुड़े हुए है इनके बीच बहोत गहरा सम्बन्ध है। सत्य संकल्प के बिना अधूरा है। संकल्प के बिना सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता है। सत्य तभी प्राप्त होता है जब मनुष्य सत्य के मार्ग में संकल्प लेकर आगे बढ़े। सत्य के मार्ग में अडिग रहने पर बहोत से विरोधी सामने आ जाते है की व्यक्ति अपना संकल्प तोड़ कर सत्य के ओर नहीं जाए। जो इन विरोधो के बाद भी सत्य के मार्ग मे पूर्ण संकल्प के साथ अडिग रहता है उसे ही सत्य का ज्ञान होता है।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:4

'युधिष्ठिर जैसा संकल्प' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर - युद्धिष्ठिर जैसे संकल्प का अर्थ है की अपने चुने हुए मार्ग पर अडिग रहना। युद्धिष्ठिर ने सत्य का मार्ग चुना और उसपे अडिग रहे उनके संकल्प के आगे मभी झुकना पड़ा। उन्होंने सत्य को अपने चरित्र में आत्मसात किया। इसी कारन उन्हें बहोत से कष्ट झेलने पड़े। कष्टों के बाद भी हमेशा सत्य के मार्ग पर चलते रहे। इसी कारन उनको धर्मराज कहकर पुकारा गया।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:5

कविता में बार-बार प्रयुक्त 'हम' कौन है और उसकी चिंता क्या है?

उत्तर - कविता में 'हम ' शब्द का प्रयोग सत्य की खोज करने वाले लोंगो को सम्बोद्धित करने के लिए किया गया है। सत्य का खोज करने वाले लोंगो की चिंता यह है कि वे सत्य के मूल रूप को खोज नहीं पा रहे है। एक बार सत्य का मूल रूप ज्ञात करने के बाद वे समाज में सत्य को स्थापित किया

जा सकेगा। परन्तु सत्य की खोज में उन्हें असफलता ही प्राप्त होती है।

12:1:5:प्रश्न और अभ्यास:6

सत्य की राह पर चल। अगर अपना भला चाहता है तो सच्चाई को पकड़।- इन पंक्तियों के प्रकाश में कविता का मर्म खोलिए।

उत्तर - आज का युग अधर्म के मार्ग पर चल रहा है। लोग सत्य का आचरण करना भूल गए है। चारो तरफ असत्य ही फैला हुआ है तथा विजयी हो रहा है। यह असत्य ही मानवता की हत्या कर रहा है क्योँकि असत्य ही अधर्म तथा अनैतिकता को बढ़ावा देता है। असत्य के कारण ही स्वार्थ और लालच का बढ़ावा मिलता है। अगर समाज में परिवर्तन करना है तथा न्याय स्थापित करना है तो सत्य के मार्ग पर चलना पड़ेगा। इसीलिए कवि लोंगो से कहते है कि यदि समाज तथा अपनी भलाई चाहता है तो उसे सत्य के मार्ग पर अडिग रहना पड़ेगा।